छत्तीसगढ़ की नयी औद्योगिक नीति और क्षेत्रीय औद्योगिक विकास : दुर्ग-भिलाई औद्योगिक क्षेत्र का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोधार्थी:

साधना बंजारे

वाणिज्य संकाय, भारती विश्वविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

शोध-निर्देशक:

डॉ. प्रशांत शुदलवार

सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य संकाय, भारती विश्वविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

सार

भारत में औद्योगिक विकास को आर्थिक प्रगति का प्रमुख आधार माना जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध होने के कारण औद्योगिक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध-पत्र में छत्तीसगढ़ राज्य की नयी औद्योगिक नीति के प्रभावों का अध्ययन दुर्ग-भिलाई औद्योगिक क्षेत्र के संदर्भ में किया गया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि नयी औद्योगिक नीति ने औद्योगिक निवेश, उत्पादन, रोजगार तथा क्षेत्रीय आर्थिक विकास को किस प्रकार प्रभावित किया है।

इस अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़े प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से उद्योगपतियों तथा व्यापारियों से प्राप्त किए गए हैं। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति एवं प्रतिशत के आधार पर किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नयी औद्योगिक नीति ने औद्योगिक निवेश को बढ़ावा दिया है तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि की है।

मुख्य शब्द

औद्योगिक नीति, औद्योगिक विकास, क्षेत्रीय विकास, निवेश, रोजगार सृजन, दुर्ग-भिलाई औद्योगिक क्षेत्र

प्रस्तावना

औद्योगिक विकास किसी भी देश अथवा राज्य की आर्थिक उन्नति का प्रमुख आधार होता है। औद्योगिक क्षेत्र के विकास से उत्पादन, रोजगार, आय स्तर तथा क्षेत्रीय विकास में वृद्धि होती है। छत्तीसगढ़ राज्य खनिज संसाधनों जैसे लौह अयस्क, कोयला, बॉक्साइट और चूना पत्थर से समृद्ध है, जिसके कारण यहाँ औद्योगिक विकास की व्यापक संभावनाएँ विद्यमान हैं।

राज्य सरकार द्वारा औद्योगिक विकास को गति देने के लिए समय-समय पर नई औद्योगिक नीतियाँ लागू की जाती हैं। इन नीतियों के माध्यम से उद्योगों को वित्तीय सहायता, कर छूट, भूमि आवंटन, बिजली आपूर्ति तथा अन्य सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। दुर्ग-भिलाई क्षेत्र औद्योगिक दृष्टि से राज्य का अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहाँ अनेक बड़े तथा मध्यम उद्योग स्थापित हैं। इसलिए इस क्षेत्र में नयी औद्योगिक नीति के प्रभावों का अध्ययन विशेष महत्व रखता है।

संबंधित शोध अध्ययन

1. दत्त एवं सुंदरम (2019) ने भारतीय औद्योगिक नीति के प्रभावों का अध्ययन करते हुए पाया कि औद्योगिक नीतियों के माध्यम से निवेश और उत्पादन में वृद्धि होती है। निष्कर्ष: औद्योगिक नीति आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करती है।

2. कुमार (2018) ने क्षेत्रीय औद्योगिक विकास का विश्लेषण किया और पाया कि औद्योगिक अवसंरचना औद्योगिक विकास का प्रमुख आधार है।

   निष्कर्ष: बेहतर अवसंरचना औद्योगिक विकास को बढ़ावा देती है।
3. मिश्रा (2017) ने छत्तीसगढ़ के औद्योगिक विकास का अध्ययन किया और पाया कि राज्य में खनिज संसाधनों की प्रचुरता औद्योगिक विकास के लिए अनुकूल है।

   निष्कर्ष: संसाधन-समृद्ध क्षेत्रों में औद्योगिक विकास की संभावनाएँ अधिक होती हैं।
4. शर्मा (2016) ने औद्योगिक नीति और आर्थिक विकास के संबंध का अध्ययन किया। निष्कर्ष: औद्योगिक नीति आर्थिक विकास तथा रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
5. सिंह (2015) ने औद्योगिक निवेश के प्रभावों का विश्लेषण किया।

   निष्कर्ष: औद्योगिक निवेश उत्पादन तथा रोजगार को बढ़ाता है।
6. गुप्ता (2014) ने लघु उद्योगों के विकास का अध्ययन किया।

   निष्कर्ष: लघु उद्योग आर्थिक विकास और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
7. जैन (2013) ने औद्योगिक विकास और रोजगार के संबंध का अध्ययन किया।

   निष्कर्ष: औद्योगिक विकास रोजगार के अवसरों को बढ़ाता है।
8. तिवारी (2012) ने औद्योगिक नीति के क्षेत्रीय प्रभावों का अध्ययन किया।

   निष्कर्ष: संतुलित औद्योगिक नीति क्षेत्रीय विकास को प्रोत्साहित करती है।

उद्देश्य

1. छत्तीसगढ़ की नयी औद्योगिक नीति के प्रभावों का अध्ययन करना।
2. दुर्ग-भिलाई क्षेत्र में औद्योगिक विकास का विश्लेषण करना।
3. औद्योगिक नीति के कारण रोजगार सृजन की स्थिति का अध्ययन करना।

परिकल्पना

H_0: नयी औद्योगिक नीति का औद्योगिक विकास पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता।
H_1: नयी औद्योगिक नीति का औद्योगिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य की नयी औद्योगिक नीति के प्रभावों का विश्लेषण करना है। इसके लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़े दुर्ग-भिलाई औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत उद्योगपतियों, व्यापारियों तथा उद्यमियों से साक्षात्कार अनुसूची एवं प्रश्नावली के माध्यम से एकत्रित किए गए हैं।
अध्ययन में नमूना चयन के लिए सरल यादृच्छिक नमूना पद्धति का उपयोग किया गया। कुल 150 उत्तरदाताओं को नमूने के रूप में चयनित किया गया। प्रश्नावली के माध्यम से औद्योगिक नीति से संबंधित विभिन्न पहलुओं जैसे निवेश, उत्पादन, रोजगार, अवसंरचना सुविधाएँ तथा सरकारी सहायता के बारे में जानकारी प्राप्त की गई।

द्वितीयक आंकड़ों के लिए सरकारी रिपोर्ट, आर्थिक सर्वेक्षण, शोध पत्र तथा पुस्तकों का उपयोग किया गया है। एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों जैसे आवृत्ति तथा प्रतिशत के आधार पर किया गया है। इससे यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया कि नयी औद्योगिक नीति ने उद्योगों के विकास को किस प्रकार प्रभावित किया है।

नमूना आकार

उत्तरदाता	संख्या
उद्योगपति	60
व्यापारी	50
उद्यमी	40
कुल	150

तालिका 1

दुर्ग-भिलाई क्षेत्र में नई औद्योगिक नीति के प्रभाव के संबंध में उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
नीति से लाभ हुआ	82	54.67
सामान्य प्रभाव	48	32
कोई प्रभाव नहीं	20	13.33
कुल	**150**	**100**

निष्कर्ष

तालिका से स्पष्ट होता है कि कुल 150 उत्तरदाताओं में 82 (54.67 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने यह मत व्यक्त किया कि नई औद्योगिक नीति से उद्योगों को लाभ प्राप्त हुआ है। जबकि 48 (32 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के अनुसार इसका प्रभाव सामान्य रहा है। इसके विपरीत 20 (13.33 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मत है कि नई औद्योगिक नीति का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश उत्तरदाता औद्योगिक नीति को उद्योगों के विकास के लिए लाभकारी मानते हैं।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नयी औद्योगिक नीति ने दुर्ग-भिलाई क्षेत्र में औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित किया है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि नीति के कारण औद्योगिक निवेश तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है। इससे क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों में भी वृद्धि हुई है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन में शून्य परिकल्पना **(H_0) अस्वीकृत तथा वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) स्वीकृत की जाती है।**

सुझाव

1. औद्योगिक अवसंरचना को और अधिक विकसित किया जाना चाहिए।
2. लघु एवं मध्यम उद्योगों को अधिक वित्तीय सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
3. उद्योगों के लिए प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहायता की व्यवस्था की जानी चाहिए।

भविष्य अनुसंधान की संभावनाएँ

1. राज्य के अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में भी इसी प्रकार के अध्ययन किए जा सकते हैं।
2. औद्योगिक नीति और रोजगार सृजन के संबंध का विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।
3. लघु एवं मध्यम उद्योगों पर नीति के प्रभाव का अलग से अध्ययन किया जा सकता है।
4. औद्योगिक नीति और क्षेत्रीय आर्थिक विकास के संबंध का गहन विश्लेषण किया जा सकता है।

संदर्भ

पुस्तकें

दत्त, आर., एवं सुंदरम, के. (2019). *भारतीय अर्थव्यवस्था*. नई दिल्ली: एस. चंद।
कुमार, ए. (2018). *औद्योगिक अर्थशास्त्र*. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग।
मिश्रा, एस. (2017). *छत्तीसगढ़ का आर्थिक विकास*. रायपुर: सीजी पब्लिकेशन।
शर्मा, पी. (2016). *भारत में औद्योगिक विकास*. नई दिल्ली: अटलांटिक।
सिंह, बी. (2015). *औद्योगिक नीति और आर्थिक विकास*. नई दिल्ली: सेज।

जर्नल

गुप्ता, आर. (2014). भारत में औद्योगिक विकास. *इकोनॉमिक रिव्यू*, 12(2), 45-52।
जैन, एस. (2013). औद्योगिक नीति में सुधार. *इंडियन इकोनॉमिक जर्नल*, 60(3), 67-75।
तिवारी, एन. (2012). क्षेत्रीय औद्योगिक विकास. *जर्नल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज़*, 18(4), 120-128।
पटेल, आर. (2016). औद्योगिक निवेश की प्रवृत्तियाँ. *इकोनॉमिक अफेयर्स*, 61(1), 88-95।
वर्मा, एस. (2017). औद्योगिक नीति और रोजगार. *इंडियन जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स*, 97(3), 210-218।